अनंगपाल पृथ्वीराज का समय वर्णन

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

॥ श्रीः ॥

अनंगपाल पृथ्वीराज समय

अर्थात्

अनंगपाल पृथ्वीराज शहाबुद्दीनकी लडाई।

पृथ्वीराज रासे से

हरिचरण सिंह चौहान मथुरा निवासी कृत.

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण - सन् २००२, सम्वत् २०५८

मूल्य : ८.०० रुपये मात्र ।

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

भूमिका ।

दोहा ।

एकरदन गजबदन वर, सिद्धिसदन गणईश ॥
मदनकदन सुत दुखदलन, चरण नवाऊं शीश॥१॥
पृथ्वीराज रासो कथा, भारतसिन्धु अथाह ॥
तामेंसे इक विन्दुले, वरणों ग्रन्थ सुचाह ॥ २ ॥

यह एक छोटीसी पोथी प्राचीन और प्रमाणिक ग्रन्थ पृथ्वीराज रासेके आशयसे लिखी गई है, यह "पृथ्वीराज रासा" हिन्दुओंके अन्तिम सम्राट पृथ्वीराज चौहानके बाल-मित्र और सामन्त तथा हिन्दीभाषाके सुप्रसिद्ध आदिकवि चंदबरदाईका बनाया हुआ एक लाख छन्दोंका ऐतिहासिक महाकाव्य होनेपर दूसरा महाभारत है ।

भारतवर्षमें एक यही ऐसा ग्रन्थ है जो बारहवीं शताब्दिका पूरा २ सच्चा इतिहास हम लोगोंको बत-

लाता है, परन्तु खेद है कि यह ग्रन्थ लुप्त प्राय होरहा है, और जहां कहीं राजस्थानोंके पुस्तकालयोंमें मिलता है, तो वह लेखकोंकी लिपि प्रमादीके कारण लेखकदोषसे बहुत कुछ अशुद्ध होगया प्रतीत होता है, तथापि उसके ऐतिहासिक-वृत्तभारत-वासियोंके मुख-कथित किस्सोंसे बराबर मिलते हैं, और जितने इतिहास आजतक अँगरेजों और अन्य भारतवासियों द्वारा बने हैं, उन सबहीमें थोडा बहुत इसका वर्णन पाया जाता है। राजापूतानेके क्षत्रिय लोग इस ग्रन्थसे अपनी जातिका गौरव समझते हैं, भारतकी वीरता धीरता और बुद्धिमानीका यह एक अनुपम ग्रन्थ रत्न है। इस ग्रन्थके नायकके साथही साथ भारतवर्षकी स्वतन्त्रता नष्ट होकर भारतवासियोंको चिरकालके लिये विधर्म्मियोंके पददलित होना पडा था, जिसको भारतवासी त्रिकालमें भी नहीं भूल सकते, पर हाय ! खेदका विषय है कि, आज कल

निर्मल भारतसन्तानके हृदयमें खोटे २ विचार पैदा होने लगगये हैं । कुछेक मनुष्य छल छिद्रभरी यावनीभाषा-ओंको पढकर समझने लगे हैं कि, भारतवासियोंके प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थ झूंठे और मुसल्मानतवारीखें सच्ची हैं ऐसा समझनेवाले मुसल्मानी तवारीखोंके प्रमाणोंको देकर भारतवर्षके रत्नग्रन्थोंको कल्पित और उनके रच-यिताओंको मूर्ख और जालसाजतक वर्णन कर बैठते हैं, पर वे यह नहीं विचारते कि जबसे विदेशियोंकी पैठ इस भारतवर्षमें हुई है, तभीसे झूंठ और जालसाजी फैलने लगी है. जिसकालमें हमारे भारतवर्षके गौरवमय ग्रन्थ-रत्न बनाये गये थे उसकालमें यहांपर झूंठ और फरेबका नाम भी नहीं था अब भी बद्रीवन नेपाल आदि देशोंमें धर्म्म और सत्यका पूरा २ वर्त्ताव इस बातकी पुष्टी करता है और हमें आदेश देता है कि, भारतव-र्षमें झूंठ फरेबकी जड विदेशियोंके आनेपरही हुई है, और वह अब यहांतक भारतमें बढ गई है कि, अपने

नामके लिये. भारतवासीगण अपने पूर्व्व पुरुषाओंकी उज्ज्वल कीर्त्तिको भी धूरमें मिला देना पाप नहीं समझते अस्तु–

जो कुछ हो, जब पुराण और महाभारत आदि पवित्र और पूजनीय ग्रन्थोंकोही कल्पित कहकर मिथ्या बतलाया जाता है तो पृथ्वीराज रासे जैसे १२ वीं शताब्दिके ग्रन्थरत्नको जाली कहैं तो आश्चर्यही क्या है। परन्तु आश्चर्य्य है तो एक है कि, हम भारतसन्तान तो अपने पूर्वजोंके यशको झूंठा साबित करनेको यत्नवान हों और विदेशीय लोग उन ग्रन्थोंकी सचाईसे अपनी भाषाओंमें ग्रन्थ बना २ कर हमारे पूर्वजोंकी वीरता धीरता और बुद्धिमानीकी बडाई कर उनका अनुकरण करनेमें यत्नवान हों, क्या इसको परमहर्ष न मानें ? अस्तु पृथ्वीराज रासेके ६९ पर्वों (प्रस्तावों) मेंसे यह एक प्रस्ताव भाषावार्त्तिकमें किया गया है इसमें पृथ्वीराजचौहानका अजमेरसे दिल्ली जाकर अपने

नाना अनंगपालसे राज्य प्राप्त करना अनंगपालजीका बद्रीवनमें तपना—पृथ्वीराज द्वारा अनंगपालके सेवकोंका निकाला जाना, उनके स्थानोंपर अपने शूर सामन्तोंको भरना अनंगपालके सेवकोंका बद्रीवनमें जाय अनंगपालको उभाडना तथा अनंगपालका दिल्लीपर चढकर पृथ्वीराजसे परास्त होना और फिर अपने माधोभाटको शहाबुद्दीन गोरी बादशाहके पास सहायताको भेजना शहाबुद्दीनका दिल्लीपर चढना मार्गमें अनंगपालजीसे मिलकर मन्त्रणाकर पृथ्वीराजके पास दूत भेजना पृथ्वीराजका युद्धको तैयार होना। शहाबुद्दीन और पृथ्वीराजका घमसान युद्ध अनंगपाल और शहाबुद्दीनका पकडा जाना फिर दण्ड देकर सुल्तानका छूटना, अनंगपालका फिर बद्रिकाश्रममें तप करनेको जाना और तब भारत सम्राट्की पदवीसे पृथ्वीराजका दिल्लीराजसिंहासनको सुशोभित करना।

आदि विषय उत्तम रीतिसे वर्णित हैं। पुस्तककी रौनक बढानेके लिये रासेके कई एक छंदोंको भी उद्धृत कर दिया है। आशा है यह पुस्तक पाठकोंको रुचिकर होगी।

हरिचरणसिंह चौहान.

॥ श्रीः ॥

अनंगपाल पृथ्वीराज समय।

दोहा।

चारवेदप्रिय चारपद, चारहु युग परिमान।
जयति चतुर्भुज जासु जग, विदित वंश चौहान॥

मालवपतिकी अजमेरपर चढाई और सोमेश्वरजी द्वारा परास्त होना।

अनन्द[1] विक्रम संवत् ११२८ में दिल्लीके तँबर-वंशी (पांडववंशी) महाराजाधिराज अनंगपालने, ईश्वरभजन करनेके विचारसे, अपने दौहित्र पृथ्वी-राज चौहानको दिल्लीका राज्य देकर बद्रिका-श्रमकी ओर तप करनेके लिये पयान किया।

---

१ अनन्द संवत्में ९० या ९१ वर्ष जोड्नेसे वर्तमान विक्रम संवत्का क्रम ठीक मिल जाता है॥

पृथ्वीराजको दिल्ली राज्यसिंहासनपर विराजते देख, दिल्ली और अजमेरकाराज्य एक होना जान, कई देशोंके राजा डाह खाने लगे । मालव देशके राजाने विचार किया कि, अनंगपालने अपना इतना बडा राज्य पृथ्वीराजको देदिया पर इन लोगोंने नेकभी उसका उपकार न माना, किन्तु इस उपकारके बदलेमें उसकी प्राण-प्यारी प्रजाको निकास अपने मनुष्य भरलिये । सच कहा हैः–

छप्पय ।

तस्कर चेलक विप्र, वैद दुर्जन अति लोभी ।
पाहुन अहि जल ज्वाल, काल नृप इनमें मोभी ॥
इनपर चिन्ता नाहिं, बहुत कारि जो पै कहिये ।
आप सहज चालंत, चित्तकी बात न लहिये ॥
प्रथिराज लोक तूंअर घरह, अरुचि दृष्टि मंडै तनह।
भोगवे धरा जीवत घनिय,शंक न कोई मानैमनह॥

मालवपतिने गक्खड, गुण्ड, भदौड़ और सोन-पुरके राजाओंको पत्र देकर बुलाया और विचार बाँधा कि पहिले अजमेर पर चढ़ाई करके सोमेश्वर को जीतना और तब दिल्लीमें पहुँचकर कलहमचाय चौहानोंके बलको ध्वंस करना चाहिये। निदान वह अपनी चतुरंगिनी सैनाले सोमेश्वरके ऊपरचढ दौडा, मार्गमें सोनपुरपर इकट्ठे हो, चम्बलको पार कर घमसान निसान बजाते, मार्गके गढ किलोंको ढहाते हुए अजमेरके सामने आन पहुँचे।

सोमेश्वरजी अचानक इन समाचारोंको सुनकर अति-चिन्तातुर हुए, उनने आज्ञा देकर बरसिंह गौड, सिंह प्रमार, संजमराय चौहान और गुरुराम, पुरोहित आदि सामंतोंको बुलाय मन्त्रणाकी कि, हमारे कई एक प्रसिद्ध शूर सामंत पृथ्वीराजके साथ दिल्लीगयेहैं जबसे पृथ्वीराजको उसके नानाअनंगपालने दिल्ली बुलालिया तबसे शत्रुलोग नानाभाँतिके

उपद्रव मचाने लगे हैं अब शत्रुओंने अवसर देखकर युद्ध मचानेका उपाय रचा है यदि मैं सन्धिका उद्योग करूं तो मेरे प्रसिद्ध आनलवंशकी अटल-कीर्त्तिमें कलंक लगे और लोग मुझे कायर कहें । अतएव युद्ध करनाही श्रेयस्कर है, परन्तु शत्रुका बल प्रबल प्रतीत होता है, इसलिये प्रत्येक बातका विचार करलेना चाहिये । सामन्तोंने कहा महाराज ! नीति शास्त्रके अनुसार छल बलसे शत्रुका नाश करनेमें कोई दोष नहीं है यथाः—

छप्पय ।

रतिविवाह छल युद्ध, अधम क्षत्री परिमानं ।
कूड कपट मारिये, अधम निद्रागत जानं ॥
मल मोचन रतिरमन, सेव पूजन जल न्हानं ॥
मंत्र जाप जप्पंत, करै नहिं घात सुजानं ॥
तुम मंततंत सच्चौ कहिय, इह अधर्म्म भ्रम हारिये।

जोगिनइनपुरुषनिन्दा अपर, तौछलरतिवाहविचा-
रिये १ छलतक्यों श्रीराम, सेतु साइर तब वंध्यो।
छल तक्यो सुग्रीव, बालि जिउ ताडह संध्यो॥
छल तक्यो लछिमना, सूर मण्डल अलि वेध्यो।
छल तक्यो नरसिंह, मृग्गकस नख उर छेद्यो॥
छलबल करंतदूषण न कोइ,कृष्णकलहकंसहकारिय
सोमेशराजताकिअप्पविधि, रत्तिवाह छलमनधरिय

अस्तु, रात्रिके समयमें शत्रुकी सेनापर धावा करनेका दृढ विचार कर, सोमेश्वरजी अपने शूर सामन्तोंको साथले, चार घडीके तडके तोमर, मुद्गर, परशा, भाला, शक्ति; तलवार, शेल, बर्छी, भुशुण्डी, वज्र, तीर, कमान, चक्र और हल, मूश-लादि शस्त्रोंसे रथी, पैदल, गजपति और अश्वारो-हियोंकी चतुरंगिनी सेनाको सजाय प्रभात होते २ ही यादवोंके दलपर टूट पडे, और क्षणभरमें उनके रक्षकोंको ध्वंसकर, मालवपतिकी सेनाको

वीरहांकसे ललकारने लगे। यादवलोग जो बेखबर पडे हुएथे, यकायक आक्रमणसे चकित हो जीनेकी आश छोड, सम्मुख युद्ध करने लगे, घोर संग्रामसे पृथ्वी रक्तमय दीखने लगी, कायर खेत छोड भागने और वीर गाजने लगे यथा-

छन्द रसावला ।

कड्डि खग्गं लगं। आइ जुट्टै अगं ॥
जानि सूरं उगं । लग्गि खग्गं बगं ॥
जानि प्रलय जगं।स्वामि धर्म्मं मगं॥
खंड खंडं अगं । शोन बुट्ढे रगं ॥
पानि वाहै खगं। शूर साधै स्रगं ॥
देवि लागी टगं । ठाम ठामं ठगं ॥
डक्कनीयं डगं । एक एकं दिगं ॥
शूर रोपै पगं । नग्ग मानों नगं ॥
सार धारं तगं । जान उ... अगं ॥
वंश जालं दगं । फुट्टि खोपं खगं ॥

दड्ढि मट्टं मगं। हंस उड्डै मगं॥
मार मारं रगं। मुःख बोले लगं॥
लट्ठ चट्टं परं। लथ्थ बथ्थं भरं॥
अंत्त ओनं झरं। जानि पब्बै झरं॥
कट्टि खंडं गुरं। हथ्थ जंगं जुरं॥
जानि खित्ती खलं। चंच गिद्धो पलं॥
ईश शीशं झलं। माल मध्ये घलं॥
शूर जद्दो बलं। अप्भ तुट्यौ कलं॥
भूप भूपं मिलं। आयुधं अत्तुलं॥

निदान यादवोंके पैर उखड़े जिधर जिसका जी चाहा भागे, चौहानोंने उनका पीछा किया सोमेश्वरजीने सूर्योदयके समय खेत सँभाला तो यादवपतिको रणभूमिमें घायल पाया बड़े प्रेम और सन्मानके साथ उसे नगरमें लिवालाये और सावधानीसे उसकी चिकित्सा करानेलगे जब एक मास और २० दिनमें वह अच्छा होगया तो

प्रीति पूर्व्वक उसको उसकी राजधानीमें पहुँचाया और नगरमें इस विजयकी खुशी मनानेके अर्थ नानाप्रकारसे ब्राह्मण तथा भाट आदिकोंको दान मान प्रदानकर प्रफुल्लित किया ।

इस विजयके समाचार चारों ओर फलनेसे पृथ्वीराजजीके शत्रुलोग दबगये ।

अनंगपालजीके भृत्योंका बद्रीवनमें जाय पुकारना.
अनंगपालजीका क्रोधित हो दिल्लीपर चढना.
और फिर पृथ्वीराजजीसे परास्त हो
गज्जनेशसे सहायता माँगना ।

पृथ्वीराजजीने दिल्ली-राज्य-सिंहासनपरबैठकर राजप्रबन्धमें बहुत कुछ उलट फेर कर राजनैतिक सिद्धान्तको प्रौढ किया । अनंगपालजीके सेवकोंको शनैः २ निकालकर उनके स्थानों पर अपने सामन्तोंको स्थापितकिया।निकासेहुए सेवकोंने बद्रीवनमें जाय अनंगपालजीको पृथ्वीराजके

विरुद्ध उभाड़ा, और समझाया कि, पृथ्वीराज विरुद्ध कार्य्यकरता है हम लोगोंने जब उसको सुरीतिमें चलनेकी सम्मति दी तो हमको निकालदिया । हे अनगेश ! वह आपकी आज्ञाओंको उल्लंघनकर प्रजाको पीड़न करता है, आप चलकर प्रजाकी रक्षा कीजिये।और जो शीघ्र न सँभारियेगा तो आपकी भूमि गई जानिये।सेवकोंके वचन सुनकर अनंगपाल अति क्रोधित हुए और अपने प्रधानदूतको आज्ञाकी कि, तुम जाकर हमारे भण्डार, धन धान, द्रव्य सबको भरलाओ । तब मन्त्रीने व्यास वचनको स्मरण करके अनंगपा-

१ अनंगपाल गढ रचिय, मत्त जोसी सो उकाल्लिय ।
हुवो तँबर मतिहीन, करी किल्ली तैं ढिल्लिय ॥
कहै व्यास जुग जोत, अगम आगम हूं जाणूं ।
तोमर ते चहुवान, होइ पुनि पुनि तुरकाणूं ॥
तुरक अबट मण्डव धरह, एक राय महि भोगवै ।
नवसत्त अन्त अंतेवरह, एक छत्र गाहि चक्कवै ॥१॥

लको पूर्व कथा कही कि, महाराज ! जब शेष
जीके मस्तक परसे आपने कीली उखाड़ कर
ढीलीकी थी तब व्यासजीने आपसे राज्यकी भवि·
ष्यत स्थितिके विषयमें कहा था कि होनहारके
वशीभूत यह राज्य आपके वंशसे चला जायगा
और आपका दौहित्र भोगेगा क्या आप
उस बातको भूलगये कि, "कीलीतो ढीली
भई, तँवर भये बलहीन" अब वही संयोग
आन लगा है क्योंकि, पृथ्वीराज आपका दौहित्र
है और आप अपने हाथसे उसे राज्य दे आये हैं
सो अब वह आपको क्योंकर लौटावेगा फिर
राजनीतिमें कहा है कि, राजाकी सेवा देवता
दुर्जन और नाग इनको ढीला न छोड़े तथा राज्यके
लिये भाई, पुत्र, पिताकाभी विश्वास न करे
क्योंकिः-

छप्पय।

धर काजै कौरवन, पंड जानिय न बंधुगति।
धर काजै दशग्रीव, बंधु बंध्यौ विभिषन मति॥
धर काजै नलराइ, बंधवन खेत न अप्यो।
धर काजै बलराइ, देव देवाधि उथप्यो॥
धरकाजमुंज तियके कहे, भोज प्रहारन मत कियो
धरकाजकंन्ह तूंअर अधम, पुत्तहसै मुख विषदियो॥

मन्त्रीके समझानेसे अनंगपालको संतोष न हुआ, उसने हठात् मन्त्रीको पृथ्वीराजके पास भेजा, उसने दरबारमें पहुँचकर महाराजा अनंगपालका हुक्म पृथ्वीराजको सुनाया और बहुत प्रकारसे समझाया, जब पृथ्वीराजने उनकी बातोंपर ध्यान न दिया तब दूत जुहारकर बल पूर्वक यह कहता हुआ उठ खड़ा हुआ कि आपके दोनों राज्य लूटे जायँगे इसमें अचरज न समझना। यह वचन सुन-

कर पृथ्वीराजके नेत्र लाल होगये और क्रोधितहो ये वचन कहे।

छप्पय।

रेबसीठ मतिढीठ, बोल बोलै मतिहीना।
सन्यपात उप्पने, किने सक्कर पय दिन्ना॥
धरकर छुट्टी संगि, हत्थचढ्ढें मरदाना।
फिरि बंछै जो मूढ, होई ताही जिय ज्याना॥
सट्ठीयबुद्धिनाट्ठिनृपति, तुमविपत्ति दिन लहिकहिय
उग्गमै सूर पश्चिम परक, तौ दिल्लीधर तुम न हिय॥

दूत अनादरकी ये बातें सुनकर हीन दीन दशा धारण किये हुए अनंगपालके पास पहुँचा और अनंगपालसे कहने लगा कि, महाराज! मैंने तो प्रथमही आपसे निवेदन किया था कि, पृथ्वीराज बली है वह सुईके अग्र भागके प्रमाण तो धरती देगाही नहीं, आपने अपने हाथों दिल्लीका राज्य उसे दिया है, वही बात उसने कही, अब आप

अपनी वृद्धावस्थाको सम्भर नरेशके हाथ न बिगडवाइये ॥

अनंगपालने मन्त्रीकी बातोंपर ध्यान न देकर सेना सजनेकी आज्ञा दी। इधर पृथ्वीराजजीने माताके पिताकी मर्य्यादाके अर्थ चिन्तवन कर अपने कैमास नामक सामन्त और मन्त्रीसे पूँछा कि अब क्या कर्त्तव्य है? क्योंकि नानाजी लोगोंके सिखानेसे धर्माधर्मको त्याग राज्यके अर्थ युद्धको आया चाहते हैं। जो संग्रामकर उनको मारता हूं तो वे माताके पिता हैं और जो दिल्लीका राज्य उनके अर्थ छोड दूं तो मेरी अपकीर्त्ति होनेसे बलकी हानि होती है इस कारण मेरी सांप छछूंदर कीसी दशा होरही है ॥

कैमासने कहा कि महाराज! न्याय तो यह है कि, अनंगपालजीने दिल्लीका राज्य अपने हाथों आपको दे दिया है, अब आप उनके लिये न

दीजिये, युद्धसे न्यायमें धब्बा नहीं लग सकता, यदि अनंगपालजी युद्धके लिये सजकर चले आवें तो आप कोटको साज, सामन्तोंको आगेकर युद्ध कीजिये, यही क्षत्रियोंका परमधर्म है॥

छप्पय।

सुनौ नृपति चहुआन, न्याय तौ कलह न किज्जै।
इन दीनो धर अप्प अप्प, तौ इनहुन दिज्जै॥
जो ग्रिमान प्रमान होइ, है सोइ नियानं।
जब लग्गै गढ आइ, जाइ तब युद्ध जरानं॥
सजि कोट ओट सामन्त सथ, नारि गोर जंबूर वहि।
लग्गे न जोर छिज्जै सुभट, इत सामंत लगंत नहि॥

उधर अनंगपालजीने सेना सजाकर दिल्लीकी ओर पयान किया मार्गमें कुछ रोक टोक न हुई सीधा दिल्ली पर घेरा आडाला और चार दिन बडी वीरतासे घोर युद्धकर दिल्लीकी भूमिको कम्पाय

मान कर दिया, परन्तु पृथ्वीराजजीकी धीरता और बुद्धिमानी तथा उसके सामन्तोंकी वीरतासे भयभीत होय खेत छोड बद्रीदिशिको फिर शरण लेनी पडी।मार्गमें पंडिय नरेशसे मिलकर सेनाका ठाठ बढाया, और सुमन्त नामक अपने प्रधान मन्त्रीकी सम्मतिसे माघो भाटको गज्जनेशके पास सहायताके अर्थ भेजा पण्ड नरेशने अनंगपाल जीसे कहा कि, चौहानका भेद देनेसे गोरीशाहके हाथसे तंवर और चौहान एक भी न रहेगा-

अनंगपालजीने माधोभाटको गजनी और नीतरावखित्री (खत्री) को पृथ्वीराजके पास भेजा नीतरावने पृथ्वीराजजीसे कहा कि,आप दिल्लीका राज्य अपने नानाजीको फेर दीजिये नहीं तो आपके हकमें अच्छा न होगा, क्योंकि यदि आप न मानेंगे तो गज्जनेशकी सहायतासे आपसे राज्य लेलिया जायगा।

पृथ्वीराजजीने कहा कि, नानाजीने हमको राज्य दिया और हमने हाथपसार कर लिया उस समय उनको क्या सूझी थी जो उन्होंने हमको राज्य दिया। जो राज्य उनने हमको उदकमें दिया है उसे वे दूसरे जन्ममें पावेंगे, अब वे वृद्ध तप करनेकेही योग्य हैं राज्य भोगनेके योग्य नहीं हैं इसलिये बद्रीवनमें जायके तपें, और जो गज्जन पतिका घमंड दिखावें, तो वे अपना सत्य, धर्म्म और साहस क्यों खोते हैं, मेरे सामन्तोंने अनेक बार गज्जनेशको पकड २ कर छोड दिया है।

छप्पय ।

दई भूमि मापित्त, लई हम हत्थ पसारह।
सो पाओ फिरि किमसु,बोल बोलहु अविचारह॥
तुम विरद्ध तप योग, राज्य चाहो सुकरन अब।
दयो राज्य तुम हमहिं, कहा उपजी चित्तह तब॥
मंगो जु आइ फिरि भूमि तुम, सोवराज्य पाओ नहीं
जोगयो जंतचालि गेहयम, कहो सुफिरि आवैकहीं॥

जलद बूंद परि धरणि, कबहुँ जाये न अप्रभ फिर।
पवन तुट्टि तरु पत्र, तरु न लग्गै सुआइ थिर॥
तुटि तारक आकाश, बहुरि आकाश न जाये।
सिंहउलंघि सावजह, सोइ पुनि हनि नहिं पाये॥
अर्प्पिय सु पुहुमि तुमउदकसह,सोपाओ दूजे जनम
तप्पो सुजाइ बद्रीतपह, मतिविचारराजस मनम॥

मन्त्रीवर! नानाजीसे कहना कि, आपतो उस दृष्टान्तकी पालना करते हैं कि, "रांड़के पाँय सुहागिन लागी, हूजो बहिना मौसी"॥

सो तुम नानाजीसे कहनाकि यदि उनको धर्म कर्म करनेके लिये द्रव्यकी चाहना होवे तो वे द्रव्य मांगलेवें और वृथा विवाद खड़ा न करें, यह कह कर दूतको विदा किया।

दूत वहाँसे चलकर हरिद्वार आया,अनंगपाल-जीसे वहाँका वृत्तान्त ज्योंका त्यों सब कह सुनाया, अनंगपालजीको पृथ्वीराजजीके कहे हुए अपमान

सूचक शब्दोंको सुनकर महारोष हो आया और क्रोधितहो एक पत्र दूतको देकर गज्जनेशके पास भेजा, दूतने गजनी पहुँचकर गज्जनेशके दरबारमें जाय अनंगपालजीका पत्र सुलतानको दिया और कहा कि, हे गज्जनेश! मैं दिल्लीके महाराजा अनंग पालका भेजा हुआ आपके पास आयाहूं। वह (अनंगपाल) हरिद्वारमें तप कर रहे हैं, उनका राज्य पृथ्वीराज चौहानने लेलिया है; वे उसे उससे मांगते हैं पर वह उनको एक तिलभर भी भूमि देना नहीं चाहता, सो आप महाराजाधिराज अनंग पालकी सहायता करनेके लिये सेनासहित पधारिये और दोनों मिलकर दिल्ली विजय कीजिये।

शहाबुद्दीनकी पृथ्वीराजपर चढाई।

गज्जनपति शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी जो पृथ्वीराजको विजय करनेकी फिक्रमें रात दिन उपाय शोचा करता था दूतद्वारा अनंगपालका

मिलना सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और शीघ्रही तत्तारखां, मारूफखां, खान्खान् खुर्शेद, कालिमखां, कमामखां, मीरनासेन, आलीलखां और अलूखां आदि योद्धाओंके साथ अर्द्धलाख चतुरंगिनी सेना ले अनंगपालकी सहायताको चढ दौडा। और सिन्धुपार होतेही तत्तारखांको२०हजार सेना देकर अनंगपालको लेनेके लिये हरिद्वार भेजा और कहा कि तुम अनंगपालको लेकर शीघ्र सोनपुर पर चले आओ। आज्ञानुसार तत्तारखां हरिद्वार पहुँचकर अनंगपालसे मिला। अनंगपालभी बहुतसे घोडे खरीदकर दोसहस्र सेनाको तैयारकर, वैराग्य स्वरूपको छोड तलवार बांधि वेषबदल, वीररस धारण किये हुए तत्तारखांसे मिला, फिर दोनों वहांसे सोनपुरकी ओर सिधारे तत्तारखांने एक योजन रहनेपर सुलतानके पास अनंगपालके पधारनेकी खबर भेजी। शहाबुद्दीन आगे बढा और

बड़ी प्रीतिके साथ अनंगपालकी अगौनीकर एक मन होकर मिला । दोनों एकआसनपर बैठे और विचार करने लगे । अनंगपालजीने अपनी सारी पूर्वकथा कह सुनाई और कहा कि, प्रातःकाल होतेही जुग्गनिपुर (दिल्ली) पर चढ चलिये । जो पृथ्वीराज आपही आकर मिलजाय तो दोनों मिलकर उसे प्राण दान देदें, यह सुनकर तत्तार-खांने कहा कि, पृथ्वीराजके पास दूत द्वारा सब बात लिखकर भेजदेनी चाहिये जिससे वह स्वयं आय मिले ।

तब शहांबुद्दीनने एक चतुर दूतको बुलाया और उसे समझाकर एकपत्र दे, पृथ्वीराजके पास भेजा, जिसमें लिखा कि, आप अनंगपालजीकी पुत्रीके पुत्र हो इसलिये अनंगपालजी अपनाराज्य आपको सौंप बद्रीवनमें तपकरनेके अर्थ गये थे, अब वे तप करके आये हैं, अतः अब आप इनका

राज्य, देश, हाथी, घोडा, सब इनको देदीजिये। हे चहुआन! चित्तमें और कुछ मत समझिये, स्वामिके जगनेपर चोर चोरी नहीं करसकता और पराई वस्तु किसीपर भोगी नहीं जाती है, अतः आप अनंगपालजीको सब देदीजिये। ग्वालको गाय चरानेको दी जाती है पर वह उसका मालिक नहीं बन सकता, चढनेके लिये किसीको घोडा दिया जावे तो चढनेवाला उसका स्वामी नहीं होसकता इसलिये हम आपके हितकरहो शिक्षा देते हैं कि, रसमें विरस न करिये, विरसमें किसीने सुख नहीं पाया है, इसी विरसमें पाण्डवों और कौरवोंके कुलका नाश होगया और जो आपके जीमें राज्य देनेकी अभिलाषा न होवे तो सम्मुख समरको आइये।

पृथ्वीराजजीने इस पत्रको सुनकर अति दुःख पाया और कहा कि, अनगेशको जिस शहाबुद्दीन

का जोर है ऐसे और भी करोडों क्यों न चढ आवें तौ भी दिल्लीका राज्य नहीं पासक्ते यह कहकर सेना सजनेकी आज्ञादी और शीघ्र नगाडोंपै चोटें लगवाय, धौंसादे युद्धको पयान किया और दो योजन पर डेरा आडाला.

यह सब कौतुक देखकर दूत शीघ्रतासे सुल्तानके पासगया और सब समाचार सुनाये कि, सम्भरेश पृथ्वीराज अपने शूर सामन्तोंको लिये हाथी घोडा, ओंकी चतुरंगिनी सेनाको सजाये चढा चला आरहा है उसके सब शूर सामंत स्वामिधर्म साधनेके लिये लडने मरने मारनेको संसारसे विरक्त होरहे हैं।यथा-

छंद तोटक ।

सजि साज चल्यो प्रथिराज बरं ।
सथ सामंत शूर सपूर भरं ॥
विरदैत महावर वीर बली ।
तिनसों किन जात न रारिकली ॥

परसें भिरि भारथ पारथसे ।
नवदें अप ऊपर आननसे ॥
युधको तिनके मुख कौन जुरें ।
न मुरें मुख धार अनी सुमुरें ॥
साजि साहन सेन हजारदसं ।
रहसे रसवान सुवीर रसं ॥
गज सत्तसुरं मद मत्त गजं ।
तिन् देखि विंध्याचल पव्व लजं ॥
घमकें घन घुग्घर घंट बनं ।
भननंकत भोंरनि झोर भनं ॥
गति देखि तुरंग कुरंग डुरैं ।
तिनके उर अंठुन कोट परैं ॥
चहुआन चल्यो चतुरंग दलं ।
साजि भैरव भूत विताल बलं ॥
चर चौंसठि जुग्गिनि सथ्थ चली ।
किलकी करैं भारथ वैर रली ॥

चमकंत सनाह सुजोति इसी।
मुकरं मधि मूरति बिंब जिसी॥
सजि टोप रंगावलि थल्ल यहां।
बनराग सुपुष्परसा बलयं॥
दोइकोश रह्यो बिच शाहि दलं।
चहुआन निसान बजे सबलं॥

पृथ्वीराज और शहाबुद्दीनकी सजीहुई सेनाका घनघोर युद्ध।

यह सुनते ही शहाबुद्दीनने अपने सब उमराव और खानोंको सेना सजानेकी आज्ञादी। आज्ञानुसार तत्तारखांने सर्पव्यूहकी रचनाकी। मध्यभागमें अनंगपालको सेना सहित स्थापितकर दाहिनी भुजापर खुरसानखांको स्थिर किया, बामभाग पर मारूफखां और पीठपर शहाबुद्दीनको खडा किया तथा मुखभाग पर आप खडे होकर सब सेनाकी बाग हाथमें ले गाजने लगा।

इधर पृथ्वीराज कूच दर कूच अपने वीर और विश्वासी शूर सामंतोको लिये विंध्याचल पर्वतको लजाते, बल पूर्वक धौंसाओंके घोर शब्दोंकी ध्वनिसे पर्व्वत नदी और वनोंको कम्पाते, भूत,प्रेत,भैरों,योगी और वेतालोंके किल किलाहट शब्दों सहित शहाबुद्दीनके दलसे दो कोशके फासलेपर आकर डटे और शहाबुद्दीनके सर्पव्यूहकी रचना सुनकर अपने कैमास नामक सामन्तको सेनापतिका भारदे गरुड़व्यूह रचनेकी आज्ञादी।कैमासने मुख भागपर स्थित हो सेनाकी बाग अपने हाथमें ली और चामुण्ड रायको पुच्छ भागपर स्थान दे पृथ्वीराजको मध्य भागमें स्थित किया। तब पृथ्वीराजजीने अपने हाथ ऊंचेकर बड़े उच्चस्वरसे अपनी सेना और सामन्तोंसे कहा कि, ऐसा प्रपंच रचना चाहिये कि, अनंगपालजी जीवित पकडमें आवें। जो कोई अनंगेशको मारेगा वह अपने जीवसे हाथ धोवेगा

पृथ्वीराजजीकी यह गम्भीर वाणी क्षण मात्रमें समस्त सेनामें व्याप्त होगई ।

कैमासने तत्तारखांको बढता देख, सामन्तोंको उत्तेजना देकर सेनाकी बाग उठाई, उधरसे तत्तारखां अपने खान और मीरोंको लिये आभिड़ा । सिंधू और मारू बाजेके बजतेही हिन्दू और मीर दोनों दलके शूर गर्जे और कायर भजे, देवता लोग अपने २ विमानोंमें बैठ कर युद्ध देखने लगे। शूरमा लोग भी अपने २ पैंतरे बदलकर हाथ छोडने लगे, रुण्ड मुण्डसे धरती ढँक गई । कैमासके अद्भुत और साहसी पराक्रम और उसकी कठोर मारको खां लोग सह न सके, बहुतेरे मारे गये बहुतेरे भाग निकले,दाहिमाने अवसर पाकर आगे बढ झटसे अनंगपालको पकड़ लिया । शहाबुद्दीन यह समाचार सुनकरबड़ेक्रोधमें आगा और तत्तारखां, मारूफखां और खुरासानीको साथले सब सेनाको इकट्ठीकर कैमासकी ओर

झुका, फिर घोर संग्राम होने लगा, शहाबुद्दीनने सायक खैंचकर मारा जो दाहिमाके तुरंग(घोडे)के लगा, निड्डुर, कमधज, राम बड गुज्जर और पुण्डीर आदिने शेल भाला तीर तलवार आदिसे मीर और खानोंके खेतके खेत काटकर क्षण भरमें मैदान कर दिया । चामुण्डरायने कालरूप धारणकर गज्जनेशकी सेनाको तीन तेरहकर शहाबुद्दीनको बरबस पकडलिया और अपनी सेनाके साथ चल दिया । पृथ्वीराजजीने जब खेतझाडा तो मालूम हुआ कि, सात सहस्र मीर और खां खेत रहे बाकी खेत छोड भागे पृथ्वीराजके ५०० पाँचशत योद्धा वीरगतिको प्राप्त हो अप्सराओं द्वारा बरेगये । इस युद्धका वर्णन भुजंगी छन्दमें इसप्रकार पर है–

छंद भुजंगप्रयात ।

लई बग्ग कैमास वीरं अमानं ।
घमंके धरा गोम गज्जे गुमानं ॥

उतें उप्परी बाग तत्तार खानं।
मिले हिन्दु मीरं दोऊ दीन मानं॥
बजे रागसिंधू सुमारूअ बज्जे।
गजे शूरशूरं अशूरं सुभज्जे॥
चढे व्योम विम्मान देखंत देवं।
बढे स्वामि कज्जे सुसज्जे रभेवं॥
छुटे नाल गोला हवाई उछंगं।
नक्षत्रं मनो जानि तुट्टे निहंगं॥
करष्षैंचले बाण बाणं कमानं।
भई अंधधुंधं न सुज्झै सुभानं॥
मिले शेल भेलं समेलं अपारं।
सनाहं फटै हीय होवंत पारं॥
मदं मत्त दंतं उखारै मसंदं।
मनो भिल्लिया पक्व उष्षालि कंदं॥
लगै नाग नागं मुखी शूर ऐंचैं।
हथ्थिनापुरं जानि बलभद्र खैंचैं॥

झरं ओझरं झार झारं झनंकै।
करै गज्ज चिक्कार ताजी किनंकै॥
हुअं पूरणं जाम मध्यान जंत्री।
मिले दिट्ठ तत्तार आनंगमन्त्री॥
चल्यो मातुलं और हक्कै कैमासं।
हन्यो खान खग्गं पहूँचे बृहासं॥
तकै तूबरं पेलयौ गज्जराजं।
धये दाहिमा पागरा छंडि बाजं॥
जरी शेल गाढी बिचं पीतवानं।
बियो घाव कीयो सुकट्टढे कृपानं॥
कटी दंतलों शुंड लोही भभक्कै।
मनो शारदा कंदराथी उबक्कै॥
पर्‍यो कज्जलं कूटज्यों तूटि हथ्थी।
तजें तूअरं भज्जिगे सब्ब सथ्थी॥
भगंदंतवालौ किधों सुप्रतीकं।
महादिग्घ कायं अरज्जुन्न झीकं॥

दवी द्वादशं कोश भूघंट मध्ये ।
पढें वेदवाणी कुरानं प्रसिद्धे ॥
परचो दाहिमा भीम ज्यों गोलकुंडे।
घटोकल्ल पथ्थं न सथ्थं उमंडे ॥
अलुझ्यो पगं अग्गमें इघ्रभराजं ।
हरी जेम कूदे करी मथ्थ गाजं ॥
किलावारह्यो पग्गमें लग्गि पासी ।
गह्यो जीवतौ बद्रिकाश्रम्म बासी।
सनट्ठं रही कट्ठढियं अद्ध बिद्धी ।
चढी हथ्थ दिल्ली न कारज्ज सिद्धी॥
उभै मीत मानों रहैं लग्गि छत्ती ।
पछं भीर सामंतकी आइ पत्ती ॥
खुरासान मारूफ तत्तार जोरी ।
करे एक फौजं धप्यो साहि गोरी॥
इते चाहुआनं भुजाके भरोसे।
मनों लंघलो सिंह तुट्टो सरोसै ॥

गढं इंद पथ्यं सहायं सुकज्जै ॥
उभै दीन जुट्टे करैं खग्ग धज्जैं ।
रसं रूकलग्गे हुए टूक टूकं ।
रिनं षत्त फट्टैं पुराने अचूकं ॥
थटे जाइ आघाट वैकुंठ थानं ।
मिट्यो नट्ट गोटा जिसौ आव जानं ॥
वरं चंग चंगे परी हूर शूरं ।
रचैं रुंड मालं महेशं गरूरं ॥
शिवा शोन पीनो सुकीनो डकारं ।
करैं खेचरा भूचरा किल्लकारं ॥
उडैं रंनगेनं भयो अंधकारं ।
पराए न अप्पं न सुज्झै लगारं ॥
इसी भाँति भारथ्थ मंतो करूरं ।
घरी चार खंचै रह्यो रथ्थ शूरं ॥
हरिद्वारलों जाइ लायो सुभग्गो ।
सबै सेन भग्गो तिनं लार लग्गो ॥

रह्यो पादशाहं भुजं लाज झल्लै।
खरं खंचि साइक्क छंडै सुभल्लै॥
गनै कौन नामं अनेकं फवज्जं।
लग्यो दाहिमा के तुरंगंम कज्जं॥
बडग्गुज्जरं कंमधज्जं पुडीरं।
छलं पारि दौरयौ करै नाहि सीरं॥
धरे सिप्परं अड्ड है कालभेसं।
लियो संघ है चौंडरा गज्जनेसं॥
कटे पारसं सत्तसाहंस मीरं।
परे पंचशै खेत हिन्दू सुवीरं॥
उभै पाहुने कीन चंदं प्रकासे।
ढले मुक्खमंगे प्रथीपत्ति वासे॥

शहाबुद्दीनको कैदसे छोडना।

पृथ्वीराज युद्ध जीतकर अपने सामंतों सहित राजधानीमें आये, कईदिन पीछे एकदिन सभामें बैठे हुए उनने अपने कैमास नामक प्रधान

मन्त्रीको आज्ञादी कि, नानाजीको सभामें लाओ आज्ञानुसार मन्त्रीने अनंगपालजीको सभामें लाय उपस्थित किया पृथ्वीराजजीने खडे होकर अनंगपालजीके पैर छूए और बडी प्रीतिके साथ सत्कार पूर्व्वक एक पृथक् आसनपर बैठाला । फिर चामुण्डरायको सुल्तानके बुलानेकी आज्ञादी, चामुण्डरायने सुल्तानको लाकर पृथ्वीराजको सौंपदिया आज्ञानुसार एक पृथक् आसनपर सुलतान शहाबुद्दीन बैठ गया और सामन्तोंके मुखकी ओर देखने लगा ।

सभामें बैठे हुए नानाजीसे पृथ्वीराज बोले, नानाजी ! आपने ऐसी कौनसी सुमति समझी जो शहाबुद्दीनको अपनी सहायतापर बुलाया इनको तो मेरे सामंतोंने कईबार पकड २ कर छोड दिया है फिर क्रमसे गोइन्दराय गहिलौत और चामुण्डराय आदि सामन्तोंने अनंगपाल-

जीसे कहते हुए अपने तीव्र और मर्मज्ञ वचनोंसे शहाबुद्दीनको वेधदिया अनंगपालजी नीची ग्रीवा कियेहुए सबके वचन सुनतेरहे, शीश न उठाया। शहाबुद्दीनने पृथ्वीराजजीकी प्रार्थनाकी और२० हाथी १०० घोडे दोलक्ष द्रव्य दण्डमें देना स्वीकारकर बन्धनसे छूटना चाहा। तब पृथ्वी-राजजीने राज्योचितसत्कारके साथ १ घोड़ा और सिरोपाव देकर शहाबुद्दीनको छोडदिया और जो कुछ दण्ड शाहसे लिया था उसमेंसे आधा चामुण्डरायको और आधा अन्य सब सामन्तोंमें बाँटदिया। इसके पश्चात् पृथ्वीराजजी अपने नानाजीकी बडी भक्ति और प्रीतिके साथ सेवा करने लगे

अनंगपालजीके विचार और फिर बद्रिकाश्रम गमन तथा पृथ्वीराजका सम्राट् पदवी धारण करना।

जब एक वर्ष व्यतीत होगया तब एक दिन अनंगपालजीने अपने सुमंत नामक प्रधानको

बुलाकर पूछा कि, हे सुमन्त ऐसी सम्मति दो जिससे कर्म धर्म रहे।

सुमंतने निवेदन किया कि, महाराज ! जोगिनपुर (दिल्ली) का राज्य दैवने पृथ्वीराजको दिया है आप वृद्ध तप करनेके योग्य हैं इससे भाई बन्धु आदिका मोह तजकर धर्म कर्ममें चित्त लगाइये क्योंकिः—

छप्पय।

न रहै सर बापीय, अनुपगढ मंडप बहुज्जं।
न रहै धन बन तरुणि, प्रवत न रहै कूफि रिछ्ज्जं॥
न रहै शशि रवि भौम, जाइ थावर अरु जंगम।
न रहै सात समुद्र, धरै भंजै सोइ अंगम।
जानहु न प्रलयचतुरंग तम, प्रलय इहै सो दिक्खिये। रासो न चित्त आचिंतका, जामन मरन विशिक्खिये॥

तब अनंगपालजीने व्यासजीसे कहा कि चहुँ-आन शत्रुको भंजिकर यह राज्य अनगनरेशकाहो या पंचनदीका आधादेश बाँटदे, तुम ऐसी युक्ति कहो। व्यासजीने कहा, हे अनगेश ! आप कुछ संदेह न करो, दिल्लीमें अधिक बलका पुंज सुलता-नको बन्धन और छोडनेवाला आपका दौहित्र पृथ्वीराज तपता है आप निर्मल ध्यानसे गुरुका ज्ञान स्मरणकर हरिभजनकर निर्मल होइये और चित्तमें दुविधाकर अपनी रती और आतप न खोइये। क्योंकि देश वेश मान पान धन गति और रूप ये मांगसे नहीं मिलते। इसलिये कन्द मूल फलका आहार करते हुए बद्रिकाश्रममें जाय तप कीजिये।

छप्पय।

कहै व्यास अनगेश, तपै दिल्ली चहुआनं॥
बहु बर बल छज्जिहै, बंध मोषन सुलतानं।

तुम बद्री तप जाहु, धरा संदेह न आनहु।
इह निर्माण प्रमाण, पुब्ब सम्बन्ध न जानहु।
निर्मल ध्यान गुरु ज्ञानकरि, हरिभजिनिर्मल होइये।
ना करो चित्त दुबिधा नृपति, अत्तपरत्त न खोइये १
न लहै मांग्यो देश, वेश पुनि मांग्यो नलहै।
नलहै मांग्यो मान, पान पुनि मांग्यो नलहै॥
नलहै धन मंगत्त, गत्त पुनि रूप बिनानं।
पुब्ब निबंध्यौ बंध, लहै सोई परिमानं॥
तुमजान ज्ञानमतिमान गुरु, नेहनलप्भै जोरबर
आतम चित्त अनचिंत तज, इहै मत्ततुम सत्तकर

अनंगपालजीको जब एक मास और एक वर्ष दिल्लीमें रहते होगया तो, व्यासजीकी सम्मतिके अनुसार एक दिन अनंगपालजी पृथ्वीराजकी सभा में चले आये, उस समय पृथ्वीराजजीकी सभामें ये सामंत लोग बैठ हुए थे। राव पजून (कछवाहा) महनंसिप (मोरी)राव पुण्डीर, नण्डुर राय कम·

धज, गोयन्दराय गहिलौत, पजून खीची जाम यादव आरम्भराव कनकू, चामुण्डराय दाहिमा, कबिचन्द आदि सामन्त गण अपने २ स्थान पर सुशोभित थे ।

अनंगपालजीको सभामेंप्रवेशकरतेही पृथ्वीराज जीकेसाथसबने उठकरअनंगपालजीको ताजीमदी

अनंगपालजीने सभामें बैठकर पृथ्वीराजजीसे कहा, हे पुत्रि पुत्र! तुमने मेरा बहुत सत्कार किया अब मैं बद्रिकाश्रममें जाकर तप करनेकी इच्छा करताहूँ।वहाँ जाय शरीर साधनकर,एकाग्रचित्तसे हरिभजनमें दिन रात ध्यान लगाकर परलोकके अर्थ सुख संचित करूंगा ।

तब पृथ्वीराजजीने कहा नानाजी। तुलादानादि सहित ध्यान ज्ञान हृदयमें धर कर, यहीं तप साधन करिये । लेकिन अनंगपालजीने न माना और बद्रिकाश्रममें जाकरही तप करना उत्तम

समझा। पृथ्वीराजजीने भी अपने नानाजीकी प्रवृत्ति इस उत्तम कार्य्यकी ओर झुकी देख दश-लाख द्रव्य सौ अनुचर और दश विप्र साथमें देकर गाजे बाजेके साथ अपने सामन्तोंको साथ ले अनंगपालजीको बद्रीबनमें पहुँचाया। फिर वहांसे आय शुभ मुहूर्त्तमें भारत सम्राट्की पदवीके साथ दिल्ली सिंहासनपर आरूढ हो विप्रोंको दान, शूर सामन्तोंको मान और भाटचारणादिकोंपारितोषि-कोंसे प्रसन्नकर प्रीतिसे प्रजाकी पालन और दण्डसे दुष्टजनोंका आखेटकर धर्मकी रक्षा करने लगे, जिससे उनकी कीर्ति भूमण्डल पर दिनपर दिन बढने लगी।

छप्पय।

धनि सुचित्त प्रथिराज, करुण रस आप उपन्नौ।
द्रव्य दरक सत अद्ध, पुण्य कारज भरि दिन्नौ॥

सबै सुभट अनगान, आनि आदर ग्रह वासिय ।
धनि धानि जंपै लोइ, कित्ति भूमंडल भासिय ॥
आखेट दुष्ट दुर्ज्जन दलन, करै केलि सामंत सथ ।
कविचंदछंदबांधियकबित,प्रथ्थराजभारथ्यकथ ।
दोहा- संवत् विक्रम भूपको, वसू तत्त्व ग्रह चन्द ।
फागुन सुदि दश बुध दिवस, पूरण ग्रन्थ सनन्द ॥

इति अनंगपाल पृथ्वीराज समय समाप्त ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.